

ये अव्यक्त इशारे  
संस्कार मिलन की रास करो

**7-04-2024**

संस्कार मिलाने के लिए जहाँ मालिक हो चलना है वहाँ बालक नहीं बनना और जहाँ बालक बनना है वहाँ मालिक नहीं बनना। बालकपन अर्थात् निरसंकल्प। जो भी आज्ञा मिले, डायरेक्शन मिले उस पर चलना। मालिक बन अपनी राय दो फिर बालक बन जाओ तो टकराव से बच जायेंगे। राय दी, मालिक बने, फिर जब फाइनल होता है तो बालक बन जाना चाहिए।

**Perform the dance of harmonising sanskars.**

In order to perform the dance of harmonising sanskars, there has to be the virtue of being a child and a master to the same extent. To be a child means to be free from any other thought and to obey whatever orders you receive. To be a master means to give your advice. When you become a master, when you should become a child, there is a conflict of sanskars. Therefore, become a master and give your advice, but then when everything is finalised, become a child.